विनता विनवे रे

विनता विनवे रे, पिउजी रसिया तमें केहेवाओ।
तो एकलड़ा अमने मूकी, अलगा केम करी थाओ।।

जो अलवेला एवा तमें, तो मंदिरिऐं न आवो केम म्हारे।
हूं माननी मान मूकी केम कहूं, पण बोलड़े बंधाणी हूं तारे।।

तूं तो मूने जाणे छे जोपे, में तो घणी खीदड़ी खुदावी।
अनेक विनवणी कीधी तें, तो हूं तारे वस आवी।।

हवे तो सर्वे में सोंप्यूं तुझने, मूल सनमंध सुध जोई।
कहे इंद्रावती मुझ बिना, तूंने एम बस न करे बीजो कोई।।